नानक वाणी (जपुजी साहेब) से उद्धृत ...

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ

ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

एकओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरबैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।

परमात्मा (ओंकार) एक है और वह सत्य (नित्य) के रूप में भासित है। वह कर्ता (करतार) है, आदि पुरुष है, भय तथा बैर से रहित है एवं तीनों कालों से परे है। वह अयोनि और स्वयंभू है। वह गुरू की कृपा से प्राप्त होता है।

The Supreme (Omkar) is one and he is expressed as (eternal) Truth. He is the creator and is immortal. He is without fear, and enmity, is beyound time, is unborn and self-illumined. He can be realised only with the grace of the Guru.

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥

ਆਖਹਿ ਮੰਗਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु।

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु।

परमात्मा सच्चा है। उसके गुणों का वर्णन अनन्त भावों में किया जाता है। लोग उसके गुणों की प्रशंसा एवं उससे अपनी कामनापूर्ति की इच्छा करते हैं। परमात्मा लोगों की इच्छापूर्ति करता है।

The Supreme (Omkar) is the only reality. His qualities are described in infinite expressions. People pray for the fulfillment of their desires to Him, and He fulfils.

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ॥

ਗੁਰੁ ਈਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਰਖੁ ਬਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ॥

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई।

गुरू ईसरू गुरू गोरखु बरमा गुरू पारबती माई।

गुरू की वाणी ही नाद (शब्द) और वेद है, क्योंकि गुरू की रसना में परमात्मा समाया हुआ है। गुरू ही शिव है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही ब्रह्मा और माँ पार्वती है।

The word of the Guru is divine. It is wisdom of the Vedas. The Supreme resides in the Guru. The Guru is Shiva, Vishnu, Brahma and Parvati.

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ, ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ।

परमात्मा के नाम का सुमिरन करने वाला मन ही मन उस आनंद का रसास्वादन करता है। यही परमात्मा के नाम की महिमा है।

Those who chant the name of the Supreme realise the ultimate bliss. Such is the glory of the Name of the Supreme (Omkar).

नानक (कार्तिक पूर्णिमा 1469 – 22 सितंबर 1539) सिखों के प्रथम गुरू हैं। नानक में एक दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाज-सुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबन्धु—सभी के गुण विद्यमान थे। नानक ने परमात्मा की उपासना का एक अलग मार्ग मानवता को दिया। हिन्दी साहित्य में नानक भक्तिकाल के निर्गुण धारा से सम्बन्ध रखते हैं। नानक ने प्रकृति से एकात्म होकर जो अभिव्यक्ति की है, वह निराली है। उनकी कविताओं में फारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी, खड़ी बोली, अरबी के शब्द मिलते हैं। उनके कुछ पदों को यहां प्रस्तुत किया गया है।